माया के भ्रम में स्वयं को मत खोइए

डॉ. मुकेश नायक

भूमि परत भा ढाबर पानी।
जनु जीवहिं माया लपटानी ॥

इन पंक्तियों में जीवन का अत्यंत गहरा दर्शन छिपा हुआ है. सरल शब्दों में इसका भाव यह है कि जैसे धरती पर गिरा पानी धीरे-धीरे उसी में समा जाता है और अपना अलग अस्तित्व खो देता है, वैसे ही मनुष्य भी माया, मोह, आकर्षण और सांसारिक उलझनों में अत्यधिक फँसकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल सकता है. इस विचार को केवल आध्यात्मिक दृष्टि से देखने की आवश्यकता नहीं है. आधुनिक जीवन के संघर्षों, महत्वाकांक्षाओं, असफलताओं और मानसिक द्वंद्वों के संदर्भ में भी इसका उतना ही गहरा अर्थ है.

आज शायद सबसे बड़ी समस्या अवसरों की कमी नहीं, बल्कि मनुष्य के मन का अनेक दिशाओं में बिखर जाना है. हम इस चिंता में रहते हैं कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं. दूसरों की सफलता से अपनी तुलना करते हैं और स्वयं को कमतर समझने लगते हैं. आर्थिक चिंताएँ हमारे वर्तमान को निगल जाती हैं. भावनात्मक संबंध कभी-कभी हमें अपने लक्ष्य से दूर कर देते हैं और एक असफलता के बाद हम स्वयं को अयोग्य मान बैठते हैं. यहीं 'माया लपटानी' का वास्तविक अर्थ समझ में आता है. माया केवल धन या भौतिक वस्तुओं का नाम नहीं है. माया वह सब कुछ है, जिससे हम इतने अधिक जुड़ जाएँ कि अपना उद्देश्य, अपनी क्षमता और अपनी पहचान भूल जाएँ. यदि कोई व्यक्ति हमारे जीवन में आता है और फिर चला जाता है तो दुख होना स्वाभाविक है. लेकिन यदि उसके चले जाने के बाद हम अपने सपनों को ही छोड़ दें, तो समस्या केवल उस व्यक्ति का जाना नहीं है. वास्तविक समस्या यह है कि हम स्वयं से दूर हो गए हैं. यदि धन की कमी है तो अधिक मेहनत कीजिए. सफलता नहीं मिल रही तो अपना तरीका बदलिए. लोग साथ नहीं दे रहे तो अकेले चलना सीखिए. बार-बार असफल हो रहे हैं तो अपनी कमजोरियों को पहचानकर उन्हें दूर कीजिए.लेकिन किसी भी परिस्थिति को अपनी पहचान मत बनने दीजिए.याद रखिए— आपकी परिस्थितियाँ आपकी पहचान नहीं हैं. आपकी असफलताएँ आपका भविष्य तय नहीं करतीं और लोगों की राय आपकी कीमत निर्धारित नहीं करती.

जीवन कई बार हमें ऐसे मोड़ पर ले आता है, जहाँ आगे कोई रास्ता दिखाई नहीं देता. लेकिन अक्सर यही क्षण हमारे भीतर छिपी शक्ति को बाहर लाते हैं. आखिर यदि सब कुछ आसानी से मिल जाए तो हमें अपनी वास्तविक क्षमता का पता कैसे चलेगा कठिनाइयाँ हमें बताती हैं कि हम वास्तव में कितने मजबूत हैं. जिस व्यक्ति ने कभी संघर्ष नहीं किया, शायद वह अपनी क्षमताओं को पूरी तरह नहीं जान पाता. लेकिन जो गिरने के बाद उठना सीखता है, असफलता के बाद फिर से शुरुआत करता है और अकेलेपन में भी अपने सपनों को जीवित रखता है, वही जीवन का वास्तविक अर्थ समझने लगता है. इसलिए यदि आज आप कठिन दौर से गुजर रहे हैं तो घबराइए मत. कठिन समय हमेशा सजा नहीं होता.कई बार कठिन समय तैयारी होता है. संभव है कि जीवन आज आपको उस मंजिल के लिए तैयार कर रहा हो, जहाँ आप कल पहुँचना चाहते हैं. आपके पास संसाधन सीमित हो सकते हैं. लोग आपको गंभीरता से नहीं लेते होंगे. आपकी मेहनत का परिणाम अभी दिखाई नहीं दे रहा होगा. आपका जीवन दूसरों को कुछ साबित करने के लिए नहीं है. आपका जीवन स्वयं को कल से बेहतर बनाने के लिए है. लोग आज आपकी आलोचना करेंगे और कल आपकी प्रशंसा भी कर सकते हैं. आज आपको नजरअंदाज करेंगे और कल आपका साथ चाहेंगे. लेकिन यदि आप अपना पूरा जीवन लोगों की राय के अनुसार चलाएँगे तो आपकी दिशा कभी स्थिर नहीं रह पाएगी. इसलिए अपने मन को मजबूत बनाइए. जब लोग कहें— 'तुम नहीं कर सकते', तो आपके भीतर से आवाज आए— 'मैं कोशिश करूँगा.' जब असफलता कहे— 'अब रुक जाओ', तो आपका उत्तर हो— 'मैं फिर से शुरुआत करूँगा.' जब परिस्थितियाँ आपको कमजोर बताएं तो अपने कर्मों से साबित कीजिए— 'मैं अभी समाप्त नहीं हुआ हूँ.' और जब सफलता मिल जाए तो जमीन से जुड़े रहिए क्योंकि माया केवल दुख और संघर्ष के समय नहीं आती. सफलता के साथ भी माया आ सकती है. धन अहंकार ला सकता है. पद गर्व पैदा कर सकता है. प्रसिद्धि व्यक्ति को दूसरों से श्रेष्ठ होने का भ्रम दे सकती है. ये भी माया और मोह के ही रूप हैं. जीवन का वास्तविक संतुलन यही है—सफलता में विनम्र रहना और असफलता में मजबूत बने रहना. अपने लक्ष्य पर ध्यान दीजिए, लेकिन अपने मूल्यों को कभी मत छोड़िए. जीवन भी कुछ ऐसा ही है. आज जिन संघर्षों से आप गुजर रहे हैं, संभव है उनका परिणाम तुरंत दिखाई न दे. लेकिन आपकी मेहनत आपके भीतर मजबूत जड़ें तैयार कर रही है. इसलिए अपने वर्तमान संघर्षों से कभी शर्मिंदा मत होइए. संघर्ष आपकी कमजोरी नहीं, आपकी तैयारी है. यदि आज आपके पास कम है तो अधिक मेहनत कीजिए. यदि आज कोई आपको नहीं पहचानता तो अपने काम को इतना मजबूत बनाइए कि एक दिन पहचान स्वयं आपको खोजती हुई आए. यदि आज आप अकेले हैं तो स्वयं का साथी बनना सीखिए. और यदि आपको लगता है कि बहुत समय बर्बाद हो चुका है तो यह याद रखिए— जीवन का सबसे बुरा क्षण गिरना नहीं है. सबसे बुरा क्षण तब होता है जब हम दोबारा उठने की कोशिश करना छोड़ देते हैं. बीता हुआ समय वापस नहीं आएगा. लेकिन भविष्य अभी भी आपके हाथ में है. अतीत को सबक बनाइए, बोझ नहीं. गलतियों को अनुभव बनाइए, अपनी पहचान नहीं. असफलताओं को सीढ़ी बनाइए, दीवार नहीं. सफलता प्राप्त कीजिए, लेकिन सफलता के अहंकार में मत डूबिए. धन कमाइए, लेकिन धन को अपनी खुशी की एकमात्र नींव मत बनाइए. आपका लक्ष्य ऐसा व्यक्ति बनना होना चाहिए जिसे परिस्थितियाँ आसानी से बदल न सकें.आज स्वयं से एक वादा कीजिए— मैं दूसरों से अपनी तुलना नहीं करूँगा. मैं असफलता से नहीं डरूँगा. मैं आलोचनाओं से टूटूँगा नहीं. मैं अपने लक्ष्य के लिए लगातार काम करता रहूँगा. और सबसे महत्वपूर्ण—मैं अपना जीवन माया, भय और दूसरों की राय के हवाले नहीं करूँगा. क्योंकि अंत में जीवन आपसे यह नहीं पूछेगा कि आपको कितने लोगों ने पसंद किया.

जीवन यह पूछेगा कि जब कठिनाइयाँ आपके सामने खड़ी थीं, तब आपने अपने सपनों के लिए कितना संघर्ष किया. इसलिए उठिए. अपने लक्ष्य को याद कीजिए. अपने भय की ओर देखिए और कहिए- 'तुम मेरे रास्ते में हो, लेकिन मेरी मंजिल नहीं हो.' लोगों को बोलने दीजिए. परिस्थितियों को बदलने दीजिए. समय को अपना काम करने दीजिए. आप बस अपना काम करते रहिए. जिस दिन व्यक्ति माया के पीछे भागना छोड़कर अपने उद्देश्य की ओर चलना शुरू कर देता है, उसी दिन उसके जीवन की दिशा बदलने लगती है. आपको हर किसी से आगे निकलने की आवश्यकता नहीं है. आपको केवल उस व्यक्ति से आगे बढ़ना है जो आप कल थे. धीरे चलिए, लेकिन रुकिए मत. गिरिए, लेकिन उठना मत छोड़िए. थकिए, लेकिन हार मत मानिए. क्योंकि आपकी कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है. संभव है कि आज का संघर्ष ही कल आपकी सबसे बड़ी पहचान बन जाए. इन शब्दों को अपने जीवन का मंत्र बना लीजिए— 'माया मुझे छू सकती है, लेकिन मुझ पर नियंत्रण नहीं कर सकती. परिस्थितियाँ मुझे देर करा सकती हैं, लेकिन मेरी मंजिल तय नहीं कर सकतीं. लोग मुझे गिरा सकते हैं, लेकिन दोबारा उठना मेरे हाथ में है. और जब तक मेरे भीतर विश्वास और कर्म करने की शक्ति है, मेरी कहानी समाप्त नहीं हुई है.' चलते रहिए. क्योंकि मंजिल उन्हीं की होती है जो रास्ते की कठिनाइयों के सामने बैठकर उन्हें स्वीकार नहीं कर लेते, बल्कि उन्हें पार करने का साहस जुटाकर आगे बढ़ते रहते हैं.

क्लास by बड़े भाई

शिक्षक से बस दो काम लीजिये

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में से हूँ जिसका बचपन दादा दादी की देखरेख में बीता है वरना आज यह इतना सुलभ कहाँ.. दादा दादी के साये में हम बात बात में इतना कुछ सीख जाते हैं जो हमें जीवन भर काम आता है.. मेरे दादाजी ने अपने गुरुजनों को लेकर एक बड़ी शानदार बात बताई थी, जिसका ज़िक्र मैं अक्सर विद्यार्थियों के बीच करता हूँ.. उन्होंने बताया था कि अपने गुरुजनों से हमें क्या क्या काम लेना चाहिए.. उनका कहना था कि जो हमारे गुरु हैं उनसे मात्र दो ही काम लिया जा सकता है, इस दो के अलावा उनसे कोई काम लेना किसी के लिए भी ठीक नही होता..

उनके बताये दो काम थे - उपदेश और आदेश..

गुरु से शिष्य को यही दो काम लेना चाहिए.. या तो उनसे वो कोई ज्ञान ले या फिर उनसे आदेश ले और उसका पालन करे..

इसके अलावा कोई दूसरा काम नही लेना चाहिए.. दादाजी ने इसका बड़ा सुन्दर उदहारण बताया था.. उन्होंने कहा कि महाभारत में देख लो, दुर्योधन ने अपने गुरुजनों को भी युद्ध क्षेत्र में युद्ध के लिए उतारा था जबकि उसे केवल उनसे उपदेश या आदेश लेना चाहिए था.. फिर उनहोंने बताया कि अर्जुन को देखो श्री कृष्ण से मार्गदर्शन लिया और स्वयं युद्ध किये.. इस बात ने मुझे बड़ा प्रभावित किया था.. शायद आपको भी अच्छी लगी हो.. गुरुजनों का स्थान सदैव हमें मार्गदर्शन करने का ही रहा है, अब उनसे कुछ और मदद मांगकर कुछ भी न हासिल कर पायें.. कल शिक्षक दिवस था तो विचार आया कि यह बात आप सबसे भी साझा करूं.. धन्यवाद.

स्त्री के मनोभावों और संवेदनाओं की मुखर अभिव्यक्ति

पुस्तक चर्चा

भावेश कानूनगो

स्त्री के मनोभावों और संवेदनाओं की मुखर अभिव्यक्ति कथाकार ई. अर्चना नायडू का सद्य :प्रकाशित कहानीङ्गसंग्रह आपकी अरु नारी-संवेदनाओं को एक सूत्र में पिरोते हुए 25 कहानियों का अत्यंत सुंदर और प्रभावपूर्ण संकलन है. इसमें नारी-जीवन के विविध आयामों, उसके जटिल अंतर्संबंधों, मनोभावों और अंतर्द्वंद्वों का मार्मिक तथा सजीव चित्रण है. लेखिका ने अलग-अलग कहानियों के माध्यम से स्त्री के अलग-अलग रूपों को उकेरा है-कहीं वह ममता से ओत-प्रोत माँ है, जो अपने बच्चे के लिव-इन संबंधों को लेकर चिंतित है; कहीं वह बालपन की सहज और निश्छल प्रेमिका के रूप में सामने आती है; तो कहीं शिष्या के रूप में जीवन-मूल्यों को आत्मसात करती दिखाई देती है. इन कहानियों में जीवन-दर्शन भी अंतर्निहित है. एक स्थान पर लेखिका लिखती हैं-हर इंसान में कुछ न कुछ आंतरिक शक्तियाँ अवश्य होती हैं, पर परिस्थितिवश वह अपने हुनर को पहचान नहीं पाता. कभी वक्त की धूल उसके विचारों पर जम जाती है और कभी वह स्वयं से अनजान बना रहता है, कस्तूरी मृग की तरह भटकता फिरता है. यह उद्धरण लेखिका की दार्शनिक दृष्टि और मानवीय मनोविज्ञान की गहरी समझ को अभिव्यक्त करता है.

संग्रह की एक प्रमुख कहानी 'आघात' एक महत्वाकांक्षी युवा कवयित्री अरु के सपनों, संघर्ष और उसके भावनात्मक टूटन की मर्मस्पर्शी कथा है. अरु अपनी मेहनत की कमाई और पिता के सहयोग से अपना पहला काव्य-संग्रह प्रकाशित कराती है, जिसे वह अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानती है. वह अपनी पुस्तक को पूरे सम्मान के साथ अपने पड़ोसी और प्रतिष्ठित साहित्यकार 'पांडे अंकल' को भेंट करती है, जिनसे उसे सराहना और मार्गदर्शन की बड़ी अपेक्षा होती है. किंतु कहानी का अंत तब अत्यंत दुखद हो जाता है, जब अरु अपनी उसी अनमोल पुस्तक को पांडे अंकल के घर से रद्दी के सामान में बाहर जाते हुए देखती है. यह प्रसंग स्थापित लोगों की संवेदनहीनता और उभरते कलाकार के मासूम विश्वास पर होने वाले आघात को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है.

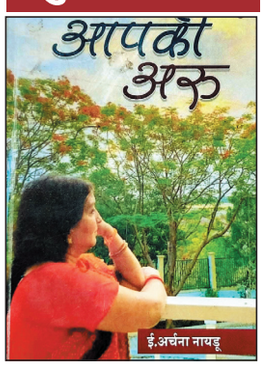

लेखिका ने अपनी कहानियों में संस्कृति और संस्कारों को जीवित रखने का सार्थक प्रयास किया है तथा सकारात्मक संदेश भी दिया है. 'किटी पार्टी' कहानी में वे आधुनिकता की अंधी दौड़ से हटकर किटी पार्टी को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर, उसे आर्थिक सहयोग के जरिए जरूरतमंदों की सहायता का सशक्त साधन बनाने का सुझाव देती हैं. संग्रह की भाषा सरल, सहज और प्रवाहमयी है, जिससे पाठक स्वयं को कहानियों से सहज ही जोड़ लेता है. संवाद यथार्थवादी हैं और परिस्थितियाँ जीवन के निकट प्रतीत होती हैं, जिससे कथाओं को विश्वसनीयता और प्रभावशीलता प्राप्त होती है. नारी के विविध संबंध-माँ, पत्नी, प्रेमिका, बहू और शिक्षिका-को संवेदनात्मक गहराई के साथ प्रस्तुत करना इस संग्रह की प्रमुख विशेषता है. समग्रत: यह संग्रह स्त्री-जीवन की अनुभूतियों और संबंधों की जटिलताओं को सहज अभिव्यक्ति देने वाला एक सराहनीय कहानी-संग्रह है. यह पाठकों को संवेदनाओं के विस्तृत संसार से परिचित कराते हुए उन्हें आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है.

आपकी अरु (कहानी संग्रह)
ई. अर्चना नायडू
मूल्य-300 रूपए
इंडिया नेटबुक्स प्रा. लि. नोएडा

लघुकथाएं

श्रद्धा जलज घाटे

अगर

आज बच्चे मेरी बात न मानें तो...? 5 सितंबर की सुबह कक्षा की सबसे शरारती बच्ची अनन्या बेहद घबराई हुई थी. आज शिक्षक दिवस पर उसे एक दिन की शिक्षिका जो बनना था.

कक्षा 8-क्र में कदम रखते ही चालीस जोड़ी आँखें अनन्या पर टिक गईं. उसने झिझकते हुए थ्योरम समझाना शुरू किया. तभी स्नेहा की छलछलाती आँखें उसे दिखीं. यह सुनकर कि माँ दुर्घटनाग्रस्त हुई हैं, अनन्या ने शिक्षिका की तरह उसका सिर सहलाया.

लंच ब्रेक में टेस्ट में कम नंबर मिलने से उदास रिद्धि से बोली, आज टिफिन अपन साथ में खायेंगे. छुट्टी के ठीक पहले, पीछे वाली बेंच से शरारती आवाजें आई तो अनन्या ने टोकते हुए कहा, अब भी सुधर जाओ. आवाज में अपनापन था, गुस्सा नहीं. पूरा दिन ब्लैकबोर्ड पोंछने से अनन्या की कलाई दुखने लगी थी, गला सूख गया था.

एक दिन की शिक्षिका

जैसे ही छुट्टी की घंटी बजी, पसीने से तर वह स्टाफ रूम में पहुँची. वहाँ कॉपियां जाँचती हुई गीता मैम को देखकर बोली, थैंक्यू मैम! आज समझ आया, आपको हमें संभालने में कितनी थकान होती होगी.

मैम मुस्कुराईं, पढ़ाए हुए शब्द जब बच्चों की आंखों की चमक बन जाते हैं, तब हमारी सारी थकान उतर जाती है. घर जाने से पहले ब्लैकबोर्ड को देखकर अनन्या एक पल ठिठकी, चाक उठाकर फिर लिखा-

धन्यवाद गीता मैम, आपने हमें सिर्फ पढ़ाया ही नहीं, गढ़ा और थामा भी है.

अविनाश अग्निहोत्री

शिक्षक

घर के लिए सुराही लेते आज डुग्गू का मायूस चेहरा मुझे बार बार याद आ रहा था. खराब तबीयत के चलते उसके एक विषय का पेपर बिगड़ गया था.

जो परिणाम में उसका परसेंटेज बिगाड़ देगा.

मन की इस सोच से एक शिक्षक पर आज एक पिता हावी हो गया.

मैने सोचा आज अपने सहकर्मी त्रिपाठी सर को अपनी दोस्ती का वास्ता देकर रिजल्ट में डुग्गू की मदद करने को कहूंगा.

इसी उधेड़बुन में मेरा ध्यान अचनक उस कुम्हार पर गया.

जो एक अन्य ग्राहक से कह रहा था. हमारी मेहनत को कम न समझो साहब. अगर इस मिट्टी के घड़े को गढ़ते हुए हमारी असावधानी से एक भी सुराख इसमें रह जाए तो सोचो उस घड़े का फिर भविष्य ही क्या बचेगा.

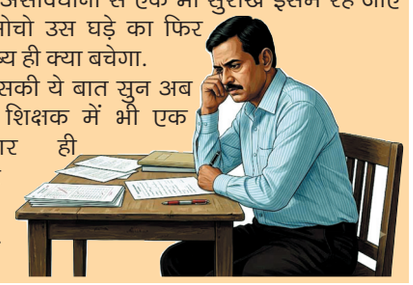

उसकी ये बात सुन अब मुझे शिक्षक में भी एक कुम्हार ही नजर आने लगा.

कविता

गलियों में बच्चे

नारायण श्रीवास्तव

और यह तपती धरती
बोझिल वृक्षों पर
नहीं दिखते पखेरु
गाय-बछड़ों का
नहीं सुना रँभाना.
सूखे खाली-खाली खेत
यहाँ वहाँ
बीमार से पड़े
निष्प्राण कृषि-यंत्र और
खुले खुले उपकरण.
कालोनियों में घूमते
निर्विकार गधे व
हाँफते कुत्तों के
कई-कई करते समूह
ओछे और कम कपड़े पहने
अलसाये खेलते
अनमने बच्चे -
नानी के घर.
किराने की दुकान पर
बहस छेड़तीं
रक्त-चाप ग्रस्त सी
हारी थकी महिलाएं.
मृगमरीचिका से
लबालब सड़कें
राष्ट्रीय राजमार्ग पर
हुर्र हुर्र चीखते
भारी चौपहिये
सर्राती गुजरतीं
अनेक रंगों में
चमकीली कारें.
लंबी प्रतीक्षा करते
पावस-गोष्ठी के -
महाप्राण श्रोताओं की
पूरी होने लगीं
कामनाएँ
साकार दिखतीं
घाघ भड्डरी की
किसानी कहावतें
प्रतीक्षित नक्षत्रों पर.
सार्थक हुए पंचांग और
मौसमी
भविष्यवाणियाँ.
अखबारों में
कवि गोष्ठी के
समाचार पढ़कर
बरसते पानी में
शैतानी समाए
उछलने लगे छप-छप
गलियों में बच्चे.

कहानी

सावन की सौगात

राजश्री राठी

अरी ओ रत्ना , आसमान में बादल देखो कैसे बरसने को बेताब हो रहे है अबकी तुम्हारे कानों के झूमके घडवा दूंगा तुम भी चलना सूनार के और अपनी पसंद से ही बनवा लेना , शामा के बापू मृग लगते ही तुम्हारे सपनों को पंख लग जाते हैं कहते हुए रत्ना खिलखिलाने? लगी.

दोनों चारपाई पर बैठे आसमान को एकटक निहार रहे थे तभी रत्ना की नजर शंकर के पैरों पर पड़ी खेत में हल चलाने के दौरान अधिक चलने से पैरों में फफोले आ गये थे जिन्हें देखकर उसकी आँखों से बरबस ही आँसू बहने लगे. कंधों पर नमी पाकर शंकर घबराया सा कहने लगा रत्ना दिल छोटा न करो अबकी देखना बरखा जरूर होगी हमारे खेत में फसल लहराती नजर आयेगी और फिर तुम्हारे बरसों के अरमान पूरे कर दूंगा तुम्हें माताजी के दर्शन करने की इच्छा है न वहां भी ले चलूंगा. अश्रुपूरित नेत्रों से रत्ना शंकर से लिपट गई, वह असमंजस में घिरा कुछ न समझ पाया.

रत्ना रातदिन इन्द्र देव को प्रसन्न करने में लग गई. जेठ की तपती गर्मी हो अथवा जाड़े का मौसम शंकर सुबह से ही खेत की और निकल जाता. परिवार के भरण पोषण की व्यवस्था में खटते रहता. समझदार रत्ना पति की पीडा को समझने में सक्षम थी उसने एक एक कर ब्याह के सारे गहने गिरवी रख दिए थे उसके मन में उन? गहनों की विशेष आसक्ति नहीं थी. शंकर का प्रेम ही उसका सर्वोत्तम गहना था. दूसरे दिन सवेरे जल्दी ही वह भोलेनाथ के दरबार में अभिषेक करने पहुँच गई. जलाभिषेक करते हुए उसके अश्कों के मोती भी शिवजी पर चढ़ते गए पति प्रेम में इतना समर्पित भाव और उत्कंठा देखकर शायद शिवजी भी प्रसन्न हुए.

रत्ना घर पहुंची ही थी की बिजली सी कौंधी और धुआंधार बारिश ने तपती धरा को तृप्त कर दिया . शंकर खेत में बुआई करने निकल रहा था तो रत्ना भी साथ हो ली दोनों हंसते मुस्कुराते प्रेम गीत गाते हुए अपने सपनों को मोतियों के दाने नजर आने लगे .

रत्ना ने अपने देवर से कह रखा था शहर जाये तब ट्रैक्टर की कीमत के बारे में पता कर आना . बरसों बाद अबकी फसल की उपज बहुत अच्छी रही. आज कि रात शंकर की खुशियाँ आसमान छू रही थी उसने अपने मजबूत बाहुपाश का हार बनाकर रत्ना को पहना दिया खिड़की से झांक रहा शशि भी इस दंपत्ति का प्रेमालाप देख मुस्कुराने लगा . सुर्योदय कब हुआ पता ही नहीं चला दोनों शहर की और निकल पड़े एक दूसरे के अरमानों को पूरा करने. रत्ना जिद पर अड गई वह शंकर के लिए ट्रैक्टर लेना चाह रही थी और शंकर उसके लिए गहने घड़वाने बेताब हो रहा था.

रत्ना कहने लगी शामा के बापू सर सलामत तो पगड़ी हजार तुम स्वस्थ रहोगे तभी परिवार खुश रह पायेगा . इन्द्र देव अगले बरस फिर प्रसन्न होंगे तब बनवा दिजिएगा गहने. अपने ट्रैक्टर पर बैठ सावन की रिमझिम फुहार का आंनद लेते हुए दोनों गांव की और निकल पड़े आसपास के पेड पौधें भी खिलखिला रहे थे.

हकीकत में पाने की लालसा लिए आगे बढ़ रहें थे . रत्ना ने कभी पति को कोसा नहीं . घर का संतोषी, प्रसन्न वातावरण समृद्धि लाने में सहायक हुआ और देखते ही देखते खेत में

दोहे

चूड़ियाँ

मोनिका डागा

हाथों में सज चूड़ियाँ करती मधु झंकार .
खन-खन-खन की ताल से, करें प्रेम संचार .

ये हरी-भरी ,चूड़ियाँ, सजनी का श्रृंगार .
सजना लाए प्रेम से, प्यारा सा उपहार . .

सजी कलाई ,चूड़ियाँ, सौभाग्य का प्रतीक .
गृहलक्ष्मी के आंतरिक, राजस्व का प्रतीत . .

चम-चम चमके चूड़ियाँ, मन को लेती जीत .
खन-खन की आवाज में, गाती मीठा गीत . .

चूड़ी हर परिवार में, देती शुभ संदेश .
मिल-जुलकर रहना भला, हो सुंदर परिवेश .

रखे परिवार जोड़ कर, मीठी-मीठी तान .
खनन-खनन की तान से, खिलती है मुस्कान .

गढ़ती शुभ संस्कार वो, सौभाग्यवती नार .
खनके जिसके हाथ में, चूड़ी की झंकार .

सावन आया है सखी, जगे भाव कुछ खास .
हरी -हरी ये चूड़ियाँ, सुख का दे अहसास .

जन्मों का संबंध ये, संस्कारों की रीत .
सुहागिनों की प्रार्थना, सुखी रहें मनमीत .

तीज-त्यौहार की चमक, चूड़ियों भरा हाथ .
सजे आनंद हर सपन, साजन-सजनी साथ .

बिखरे खुशियों की महक, बजता जब संगीत .
भरे उत्साह चूड़ियाँ, जीवन का प्रिय गीत .

प्रेम समर्पण की यही, जानो सच्ची बात .
बागबान में चूड़ियाँ, लाएं नवल प्रभात .

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी